next time. Now, the Government will promulgate an ordinance as soon as the House is adjourned *sine die*. I am sure about it. That is the process of the Government. The Government issues ordinances even in the case of Bills which have been referred to the Standing Committee and it has also submitted the Reports. Even in the case of Bills which have been discussed in the Rajya Sabha and referred to the Standing Committees, the Government is issuing ordinances. When it was in that process, the Government issued the ordinance.

So, in the instant case also, the Government's idea is to issue an ordinance immediately after the Session. That is not correct. If you want to do it, do it properly. Bring it before the House and have a discussion. We will pass it without any difficulty. I would again request the Central Government not to issue an ordinance, but to bring the legislation now itself. We will pass it. . (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : No cross talks please.

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा (धंधुका) : सभापति महोदय, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान एक महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। देश के अंदर मीटरगेज से ब्रॉडगेज रेल लाइन बनाई जाती हैं। मेरे संसदीय क्षेत्र धंधुका से अहमदाबाद होते हुए भावनगर तक ब्रॉडगेज लाइन बनी है। लेकिन वहां पहले जो मीटरगेज की लाइन पर फाटक थे, वे सब बंद कर दिए गए हैं। इस कारण वहां के लोग परेशान हैं, क्योंकि उन्हें अपने ट्रेक्टर लॉरी इत्यादि वाहन ले जाने में दिक्कत हो रही है और वे छः-छः किलोमीटर घूम कर आते हैं। जो फाटक हैं, वहां आदमी नहीं हैं। इसलिए मेरी मांग है कि वहां फाटक पर कर्मचारियों की नियुक्ति की जाए और सारे फाटक 24 घंटे खुले रहने चाहिए।

इसके अलावा एक समस्या वहां और पैदा हो गई। किसानों के खेत खराब हो रहे हैं, क्योंकि ब्रॉडगेज होने से पटरी ऊंची हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि एक तरफ के खेतों में तो पानी भरा रहता है और दूसरी तरफ के खेत सूख रहे हैं। इसी तरह से स्टेशन पर जो प्लेटफार्म बनाए गए हैं, वे लम्बे बनाने चाहिए। इतना ही नहीं, वे काफी नीचे बनाए गए हैं, जिसके कारण आए दिन वहां बच्चे और बूढ़े गिर जाते हैं और कई लोग तो मारे भी गए हैं। इसलिए प्लेटफार्म्स की ऊंचाई जमीन से ऊपर होनी चाहिए। इसके अलावा उन पर नई छत बनानी चाहिए। नई पटरियां बनाई गईं, ब्राडगेज लाइन बना दी गई, लेकिन सुविधा नहीं बढ़ाई गई। बोटाद से अहमदाबाद तक की रेल लाइन मीटरगेज है। इसे ब्रॉडगेज में बदलने के लिए मैं लगातार 1989 से मांग कर रहा हूं। लेकिन इसका अभी तक न तो कोई सर्वे हुआ है और न ही वह बन रही है। यह देखा गया है कि रेल मंत्री ज्यादातर बिहार से या साउथ से आते हैं। गुजरात से कोई रेल मंत्री नहीं बना, शायद इसीलिए गुजरात के साथ रेल के मामले में अन्याय होता है, जबकि गुजरात में सबसे ज्यादा लोग टिकट लेकर सफर करते हैं और रेलवे को भी वहां से सबसे अधिक आमदनी होती है। लेकिन वहां के लोगों को फिर भी सुविधा नहीं मिल रही है। वहां पर काफी लोग जो पास होल्डर्स हैं, कर्मचारी हैं, मजदूर हैं, वे रोजाना आते-जाते हैं, लेकिन रेलगाड़ियों में पर्याप्त डिब्बे नहीं होने की वजह से उन्हें काफी दिक्कत होती है। इसलिए लोग खड़े होकर यात्रा करते हैं। हमारी मां-बहने तो बैठ ही नहीं सकतीं। इसके अलावा दुख की बात यह है कि रेलगाड़ियों में बिजली नहीं है, पानी नहीं है। इसकी वजह से कभी-कभी वहां रेल रोको आन्दोलन

भी होता है। इस वजह से जो वहां के कर्मचारी हैं, जो पास होल्डर्स हैं, उन पर केस कर दिया जाता है और वह केस मुम्बई में चलता है, न कि गुजरात में। इससे लोगों को काफी परेशानी होती है। इसके अलावा समय भी बदल देते हैं, जिससे उन लोगों को फायदा न हो। इसलिए जो वहां कर्मचारी हैं, जो पास होल्डर्स हैं, जो रोजाना यात्रा करते हैं और अपने काम पर जाते हैं, उन्हें विश्वास में लेकर टाइम बदलना चाहिए। तब ही हम रेल का लाभ आम जनता को दे सकेंगे।

सभापति महोदय, मैंने जो मुद्दे उठाए हैं, उम्मीदे करता हूं कि सरकार उन पर ध्यान देगी।

श्री हंसराज जी.अहीर (चन्द्रपुर) : सभापति जी मैं मध्य भारत में जहां पर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के विदर्भ, गडचिरोली और चंद्रपुर क्षेत्र में सिकलसेल नामक बिमारी बहुत बड़े पैमाने पर, ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में फैली हुई है। इस बीमारी के मरीज को 15 दिन या एक महीने में खून बदलवाना पड़ता है। गरीब तबके में यह बीमारी होने की वजह से सैंकड़ों बच्चे मौत के मुंह में चले जाते हैं। आपके माध्यम से मैं माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी को यह बताना चाहूंगा कि जितनी गंभीरता से हम कैंसर को लेते हैं उतनी गंभीरता से इस बीमारी को नहीं लिया जा रहा है। लेकिन यह कैंसर से भी ज्यादा गंभीर बीमारी है। जो बच्चे इस बीमारी से ग्रस्त होते हैं उनकी उम्र कम हो जाती है और वे पूरी उम्र तक जी नहीं सकते हैं। थैलीसीमिया की तरह यह भी खून की बीमारी है। केन्द्र सरकार ने थैलीसीमिया के मरीज के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएं प्रदान की हैं